समय है... फरिश्ते बन विचरण करें...

समय के साथ बहुत कुछ बदला हुआ अब स्वीकार करना ही पड़ेगा। और लोगों ने स्वीकार कर भी लिया है। मनुष्य के जीवन में कुछ चीज़ें ऐसी उतर गई हैं कि वह विरोध कर ही नहीं रहा। जैसे- शराब, भ्रष्टाचार, लीव इन रिलेशनशिप, हिंसा, बीमारी के इलाज के नाम पर लूट। डॉक्टर जब पर्चा लिखता है तो कभी-कभी तो लगता है कि ये सब गलत है, पर सब झेल रहे हैं। कुल मिलाकर कहें तो बहुत कुछ गलत धीरे-धीरे सही मान लिया गया। ऐसे में निजी रूप से अपने चरित्र को बचाना चाहिए। आज हम हैं, कल हम भी नहीं रहेंगे। हमारी राख पर कितने ही लोग गुज़र जायेंगे। हमारी चिता बुझेगी, उससे पहले दूसरे मुर्दे तैयार हो जायेंगे। फिर छोड़कर क्या जायेंगे! विश्वास कीजिए, छूटेगा तो सिर्फ चरित्र। सद्चरित्र से किये हुए कार्य याद किये जायेंगे। हालांकि कृत्य तो बुरे भी याद किये जाते हैं, पर वे नीचे संसार में ही स्मरण रहेंगे। यदि पीछे अच्छे कार्य छोड़ गये तो संसार के लोगों को तो याद रहेंगे ही, संसार बनाने वाला भी याद रखेगा।

जबकि हम सभी को मालूम है कि हमें एक दिन जाना है। हम बहुत भाग्यशाली हैं कि हमें कैसे जाना है, ये ज्ञान का प्रकाश व ज्ञान देने वाला दाता भी हमारे साथ है। इस समय पर हमारा दायित्व है कि हम संसार में ऐसे रहें जैसे कि फरिश्ते। फरिश्ते की मुख्यतः क्वालिटीज़ हैं कि वे स्वयं हल्के होंगे व उनके संपर्क में आने वालों को भी हल्का कर देंगे। माना कि वे दूसरों को एक तरह से देते हैं। जो आज संसार की हालत है उसमें उनका कृत्य देने का होगा। दूसरा, वे परमात्मा का संदेश भी देंगे व उनके द्वारा सौंपे हुए कार्य को निष्ठापूर्वक करेंगे। उन्हें कभी भी मान, अपमान, अभिमान, निंदा, स्तुति, घृणा, नफरत, ईर्ष्या स्पर्श भी नहीं करेंगी। वे जैसे सिर्फ कठपुतली की तरह ही इस धरा पर हैं, नचाने वाला नचा रहा है। कार्य पूरा हुआ और वे डिटैच। शरीर में रहेंगे भी ऐसे जैसे कि शरीर रूपी कमरे में प्रवेश करके कार्य किया और उपराम। वे सदा रूहानी रूहाब में रहेंगे। अतीन्द्रिय सुख की अनुभूतियों में डूबे रहेंगे। कछुए की तरह परमात्मा द्वारा दिए हुए कार्य को किया और सर्व कर्मेन्द्रियों को समेट लिया। न उसके प्रभाव में और न आकर्षण में आएंगे। 'मैं और मेरापन' के जर्म्स उनको छुएंगे भी नहीं। निमित्तपन का भान भी उन्हें नहीं रहेगा। कहते हैं ना, जैसे कि कर्मातीत। कर्म के लेप-छेप से परे। समय की मांग है, ऐसा फरिश्ता जो दूसरों का दुःख, कष्ट हर ले और सत्य पथ पर चलने का मार्ग दिखाकर सभी को सुकून का एहसास कराए। तो हम सभी ऐसे कार्य के लिए ही यहाँ हैं। बेशक यहाँ पर चुनौतियां भी हैं, तो अवसर भी। क्योंकि हमारे साथ सबसे बड़ी उपलब्धि है स्वयं परमात्मा का साथ। जो दुनिया की कल्पना से भी परे है। बस इस अवसर का लाभ लेकर अपनी तकदीर की लकीर को जितना चाहे लम्बी खींच लें।

ब्र.कु. गंगाधर

वर्तमान समय हमारे मन की शक्तियों को उस पर फोकस कर दें जिससे कि मन तृप्त हो जाये। कई बार होता है कि ये होना चाहिए, ये करना चाहिए, ऐसा सोचना चाहिए, पर समय पर जैसा होना चाहिए वैसा नहीं होता, अब ये शिकायत न रहे। लेकिन जो होना चाहिए वही हो, वैसा ही हो और उसी समय पर हो, ये आत्मविश्वास एवं संतुष्टता हमें महसूस होनी चाहिए। क्योंकि सर्वशक्तिवान अपना सर्वस्व लुटा रहा है, तो हम उसका सम्पूर्ण लाभ लें। तपस्या हमें यही करनी है। हमारे मन की शक्तियां शत् प्रतिशत उस श्रेष्ठ कार्य पर ही केन्द्रित हों। कहीं पर भी भटकाव, अटकाव व व्यर्थ में क्षीण न होती हो, ये हमें ध्यान रखना है। इसी देह में हमें फरिश्ता बनकर रहना है और अगले कदम में देवता के रूप में इस धरा पर आना है। इसी को ही तो कहते हैं, बाप और वर्से को याद कर, अतीन्द्रिय सुख में रह उड़ते रहें। ऐसे अपने को तपाकर चौबीस कैरेट सोने की तरह स्थिति बनाकर यहां विचरण करना है। है ना! ऐसा कर्त्तव्य करें जो जाने के बाद भी हमारे कर्त्तव्य ज़िंदा रहें, जो अनेकों को राह दिखाकर उनकी ज़िन्दगी में सुकून लाये। ये सब तब होगा, जिनके बारे में आज विचार किया, जब वही लक्षण जीवन में होंगे। ऐसे सद्जीवन की सुगंध सदियों तक इस धरती पर बिखरती रहेगी। तो आप अपनी मनोस्थिति को ऐसी बनाने के लिए अपने आप को तैयार करें। ब्राह्मण तो हम हैं ही, अब सो फरिश्ता सो देवता बनना है। बस अब ये परमात्मा के महावाक्य कानों में गूंजते रहें और नज़ारे दिखते रहें।

पहले-पहले आत्मा का अभ्यास पक्का चाहिए

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

हम त्रिकालदर्शी हैं तो क्यों का क्वेश्चन उठ सकता है क्या? तीनों कालों को जानते हैं और वर्तमान को ही नहीं समझ रहे हैं इसीलिए समस्या के टाइम क्यों का शब्द नहीं आना चाहिए। अगर व्यर्थ संकल्प चलना शुरू हो जाता है तो हमारी एकाग्रता खत्म हो जाती है, और एकाग्रता खत्म होने के कारण जो समस्या का हल होना चाहिए वो तो होता ही नहीं, फिर समझते हैं ड्रामा में शायद मेरा पार्ट ही ऐसा है... ऐसा सोचते और दिलशिकस्त हो जाते हैं। तब बाबा कहते हैं कि तपस्या माना मन-बुद्धि की एकाग्रता। तपस्या माना योग में बैठ जाना नहीं, योग लगेगा ही नहीं क्योंकि मन और बुद्धि एकाग्र है ही नहीं तो कैसे योग लगेगा और तपस्या कैसे होगी? तो पहले यह चेक करो कि हमको अगर तपस्वी बनना है, तपस्या में सक्सेस(सफल) होना है तो पहले मेरा मन एकाग्र हो। ऐसे नहीं मैं अभी सोचूँ और मन आधा घंटे के बाद जाके मेहनत करके ठीक हो। उसमें आधा घंटा तो चला गया।

तो अगर आप अच्छी तरह से तपस्या करना चाहते हैं तो मन और बुद्धि को एकाग्र करो। एकाग्रता का आधार है कन्ट्रोलिंग और रूलिंग पॉवर। रूलिंग पॉवर का मतलब यह है कि मैं सचमुच अपने को आत्मा मालिक हूँ, रूलर हूँ... ऐसे समझके चलना क्योंकि जब तक हम मन के मालिक के रूप की स्मृति में नहीं रहेंगे तब तक मन वश में हो नहीं सकता। तो मन को एकाग्र होने के लिए हमको पहला पाठ पक्का करना होगा,मैं आत्मा मालिक हूँ। आत्मा का पाठ अगर हमारे मन में पक्का नहीं है तो कितना भी पुरूषार्थ करेंगे तो भी आप किसी बात में सक्सेस नहीं हो सकेंगे। तो जब तक चलते-फिरते आत्मा का पाठ हमारा पक्का नहीं है तो परमात्मा से कनेक्शन जैसे हम चाहते हैं वैसे नहीं होगा, क्योंकि हम दूसरों को समझाते हैं, आप भगवान को याद करना चाहते हैं तो भी क्यों नहीं याद आता है? क्योंकि अपने को शरीर समझके करते हो, अपने को आत्मा समझके करो तो परमात्मा याद आयेंगे, ऐसे दूसरों को पाठ पढ़ाते हैं। तो पहले यह चेक करें हम आत्म अभिमानी की स्टेज में पास हैं? क्योंकि देहभान कैसे छूटेगा? आत्म-अभिमानी बनने से।

हम लोगों ने शुरू में इसका अभ्यास बहुत किया है, चलते-फिरते भी इसका अभ्यास किया है। अभी तो आने से ही चाहे घर की सेवा, चाहे बाहर की सेवा में लग गये। आत्मा का पाठ हम लोगों को पक्का करना चाहिए। मैं आत्मा रूप में स्थित नहीं होंगी तो मन मेरा क्यों मानेगा? तो सदा याद रखो मैं आत्मा करावनहार हूँ कर्मेन्द्रियों द्वारा, और बाबा हमारा करावनहार है इसलिए मैं निमित्त हूँ। अगर एक करावनहार शब्द भी हमको याद आवे तो उसमें मजा है ना, मालिक बनके मैं करा रही हूँ। तो हम आत्मा मालिक हैं, करावनहार हूँ, यह मेरी कर्मेन्द्रियां जो हैं वो कर्मचारी साथी हैं क्योंकि इनके बिना तो काम नहीं चल सकता है ना! तो पहले आत्मा का पाठ चेक करो, हम लोगों का फाउण्डेशन ही यह है। सारा दिन कर्म करते यह याद रहता है कि मैं आत्मा हूँ, परमात्मा की सन्तान हूँ फिर बाबा जो भी स्वमान देता है... उसे याद करो।

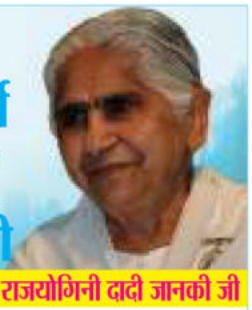

त्याग और तपस्या की मूर्ति बनो तो सेवायें अपने आप होंगी

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा की दिल को खुश करने के लिए, सारी उम्र सफल करने के लिए सेवा में सदा हाज़िर रहे हैं। बाबा के जो अच्छे-अच्छे महावाक्य हैं वो कभी भूलते नहीं हैं, बाकी कोई बात याद आती नहीं है। मैं कोई को भी फिकर में या भारी नहीं देखना चाहती हूँ। कोई घड़ी भी कोई कारण से भारी हो जाये, तो भी सेकण्ड में हल्का हो जाओ। कोई बात नहीं, लेट गो। शान्ति से काम लो। यह एक्टिंग नहीं है वास्तव में राजाई है। बाबा ऐसे ही राजा नहीं बना, बाबा को गालियां भी खानी पड़ी। बच्चों के भी कई प्रकार के खेल देखे। अच्छे-अच्छे बच्चे जो बाबा-बाबा कहें, वो कल बाबा कौन है? मैं तो जा रहा हूँ...। मेरे को भी कहने लगे तुम सब मूर्ख हो, अपनी जीवन गंवायेगी, तुम भी सोचो अपना। ऐसे अच्छे-अच्छे को भी संशयबुद्धि होते हुए देखा है। इससे बचने के लिए संग और अन्न की बहुत सम्भाल चाहिए।

बाबा ने जो परहेज सिखाई है जितना उस परहेज में रहें उतना फायदा है। पहले-पहले जब सेवा में निकले, कुछ भी खाने को नहीं होता था सिर्फ रोटी बनाके नमक लगाके खाते थे, पर फिर भी वो दिन बड़े प्यारे थे, उन दिनों में बहुत अच्छा लगता था। त्याग, तपस्या से जो सेवायें हुई हैं, वह अभी तक भी काम आ रहा है। अपने आप जिस समय जो चाहे वो हो जाता है, कभी भूल से भी कुछ मांगना नहीं पड़ा। पहले टूथ ब्रश भी नहीं यूज़ करते थे, नीम से ही दातून करते थे। तो जो बाबा ने कहा है किया है, कराया है। अभी भी मैं आपको कहती हूँ समय और संकल्प को सफल करना। एक भी संकल्प मेरा निष्फल न जाये। बाबा कहता है "मैं बैठा हूँ" हो जायेगा... बड़ी बात नहीं है, यह अनुभव करो।

सिर्फ त्याग वृत्ति, तपस्या वृत्ति की मूर्ति रहो तो सेवायें आपेही होती और बढ़ती रहेंगी। कई प्रकार की सेवायें हुई हैं परन्तु बड़ी सुख, शान्ति और प्रेम से सेवा हुई है। मैं अभी यही चाहती हूँ जैसे हमने निमित्त बनके सेवायें की हैं, सबने मिल करके की हैं वैसे करें तो कहीं कोई प्रॉब्लम नहीं होगी।

अमृतवेला है वरदाता बाप से वरदान लेने का

एक बार अमृतवेले आँख खुलते ही एक आवाज़ सुनी जैसे कोई ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा है, पुकार रहा है, आवाज़ कर रहा है। इधर-उधर देखा कुछ नहीं नज़र आया, ऐसे भी लगा जैसे कोई मर गया हो, इतने में ही रिकार्ड बजा साढ़े तीन का, उठी। आकर बाबा के पास, बाबा की मीठी यादों में बैठी। ऐसी भासना आई बाबा बार-बार यह कह रहा है बच्ची अब बहुत जल्दी वो दिन आना है, जब तुम्हारे विजय के नगाड़े बजने हैं। दुनिया देखती ही रह जायेगी, तुम उड़के चले जायेंगे। तुम शक्तियों की सिद्धि कहो, सफलता कहो, विजय कहो, अब बहुत ज़ोर से सारी दुनिया में यह आवाज़ उठनी है, इसलिए सबको बोलो- कोई भी बीता हुआ कुछ भी न देखे, यह क्या होगा, कैसे होगा यह न सोच सब आगे-आगे बढ़ते जाओ। ऐसे ही सुबह के टाइम कई बार बाबा कुछ प्रेरणा दे देता।

मैं बाबा से पूछती हूँ क्या सिद्धियों को सामने लाना है, क्या सिद्धियों का आह्वान करना है, या सिद्धि स्वरूप बनना है? या सिद्धि स्वरूप हैं? उसी घड़ी आता मैं ये सूक्ष्म संकल्प भी क्यों उठाऊं, मुझे सिद्धि स्वरूप बनना है। क्यों न समझूं मैं हूँ ही सिद्धि स्वरूप। न हूँ तो संकल्प उठाऊं। शक्य हो तो पुरुषार्थ करूँ। हमारे मस्तक पर लिखा है चमकती हुई मणियां हो, मणि का अर्थ ही है चमकना। कल्प पहले भी चमक वाली मणि थी, आज भी हूँ, हमें नशा रहता हम हैं ही बाबा की चमकती हुई मणियां, सिद्धि स्वरूप मणियां, हम कोई झूठे पत्थर नहीं हैं। हम तो सच्चे पन्ना और माणिक हैं, तब तो हमारे ऊपर पुखराज परी, नीलमपरी का गायन है। हर बात में मैं अपने को सफलतामूर्त, विजयी देखती हूँ, मैं कभी दिलशिकस्त नहीं होती।

अमृतवेले ऐसी मीठी-मीठी रूहरिहान बाबा से चलती है। बाबा हम बच्चों को रोज़ हर तरह से पुश करता। सवेरे का टाइम है वरदान लेने का और शाम का टाइम है वरदान देने का। यह कैसे? सवेरे जब मैं बैठती तो जैसे ऊपर से फोकस की तरह सारे वरदान बाबा मुझे दे रहा है, ऐसे लगता है जैसे किसी चीज़ पर सर्व प्रकार के लाइट के फोकस दिये जाते- वैसे सारे वरदानों का फोकस बाबा देता और मस्तक चमकता जाता- गोल्डन होता जाता। इन जटाओं पर जैसे स्नो फॉल की तरह लाइट का फॉल बह रहा है। ऐसे मैं स्वयं के साथ-साथ सबको देखती हूँ। सवेरे-सवेरे बुद्धि दिव्य रहती, देह भान से परे बाबा में रहती, सतोप्रधान होती, उस टाइम बाबा से सहज ही बुद्धि जुटी होती, वह घड़ियां ऐसे अनुभव होती जैसे सारे दिन के लिए बाबा सबकुछ कर देता है, तब कहा अमृतवेला है वरदाता बाप से वरदान लेने का। कई बार बाबा गुह्य ज्ञान की लहरों में ले जाता, कई बार सर्विस की नई-नई प्रेरणायें देता, शक्तियां भरता फिर कहता बच्ची मैंने छत्र रख दिया- अब जाओ सारा दिन राजधानी में सेवा करो, सिंहासन पर तो छत्रधारी ही बैठेंगे ना! कई बार

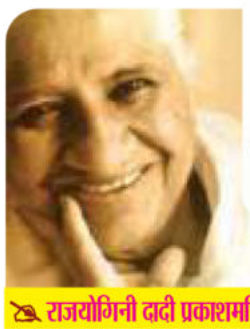

हम बाबा के कितने लक्की, भाग्यशाली बच्चे हैं। बाबा हमें इतनी लाइट देता, शक्ति देता, सेफ्टी में रखता, इसको कहते हैं माया तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकती।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

सुबह सुस्ती होती, इधर सुस्ती आती उधर चुस्त करने बाबा उठा ले जाता, फिर कहता देखा उठी तो क्या पाया? बाबा कहता बच्ची सुस्त नहीं बनो, उठो तो छत्र रखूँ, अमृतवेले बाबा छत्रछाया का छत्र रख देता है। माया से विजय पाने के लिए बाबा छत्र पहना देता है, कोई भी दुश्मन नहीं आता, दूर से ही भाग जाता, इसलिए कहते हैं सवेरे-सवेरे बाबा की छत्रछाया के नीचे बैठो तो छाया में रहने से माया परे हो जायेगी।

मैं देखती हूँ अमृतवेले बाबा के सामने जैसे अनेक बच्चे बैठे हैं- बाबा सबके ऊपर हाथ फिराता जाता, यह कोई भक्ति नहीं, बाबा हम सबके ऊपर सिर से पांव तक हाथ घुमा देता कि बच्चे तुम सदा छाया में रहना, माया का तुम्हारे ऊपर कोई वार न हो। इसको कहते हैं कदम में पदम, बाबा अपनी लाइट-माइट से माया की नज़र उतार देता है। हम बाबा के कितने लक्की, भाग्यशाली बच्चे हैं। बाबा हमें इतनी लाइट देता, शक्ति देता, सेफ्टी में रखता, इसको कहते हैं माया तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकती। ऐसा हम सभी के लिए देखती, सब आकारी रूप में फरिश्ते होते। सबको बाबा रूहानी दृष्टि देता फिर कहता जाओ सारा दिन कामकाज करो, मैं अपना साकारी रूप नहीं देखती। मैं बाबा की परीज़ादी हूँ, बाबा और बाबा के हम बच्चे चमकती हुई मणियां हैं, बस। यह सब सुनाने का सूक्ष्म भाव यह है कि आप सब भी अपने को बहुत-बहुत महान आत्मा समझो। यह अन्डरलाइन करो, हम कम नहीं, पता नहीं यह होशियार हैं, मैं ऐसी हूँ, यह ऐसी ऐसा कभी भी नहीं सोचो। छोटी भी सुभान अल्ला तो बड़ी भी। छोटी भी महान आत्मा तो बड़ी भी।

हम सबको निश्चय है हमें भगवान पढ़ाता है, हम ईश्वरीय परिवार के हैं, ब्रह्मा बाबा हमारी गुप्त माँ है, हम भगवान के प्यारे हैं, हम शेरणी शक्तियां हैं। हम सबका टाइटल, निश्चय, सरनेम एक ही है, हम ब्राह्मण कुल भूषण हैं, इसलिए कभी भी अपने को नीचा नहीं समझो। नम्रता गुण है, नीच दासपना है।